हरा - भरा रहता है जो देशहरो कहलाता है

* अरावली भारत की महान जल विभाजक का हिस्सा है यह राज्यो को दो विशिष्ट भौगोलिक प्रदेशो मे विभाजित करती है —

1. मरुस्थलीय प्रदेश [क्षेत्र - 60%
   जनसंख्या - 40%

2. गैर मरुस्थलीय प्रदेश [क्षेत्र - 40%
   जनसंख्या - 60%

3. पूर्वी मैदानी प्रदेश

* अरावली के पूर्व मे नदियो द्वारा निर्मित जलोढ मैदान जिसे नदी बेसीन के आधार पर निम्न भागों मे बांटा जाता है —

1. चम्बल बेसीन 2. माही / छप्पन बेसीन
3. बाणगंगा बेसीन 4. बनास बेसीन

1. चम्बल बेसीन →

इस भाग का विस्तार चितौड़गढ़, कोटा, बूंदी, सवाईमाधोपुर, करौली, धौलपुर जिलो में है

- चम्बल बेसीन का ढाल दक्षिण से उत्तर अथवा दक्षिण से उत्तर पूर्व की ओर मिलता है।

* चम्बल बेसीन उत्खात स्थलाकृतियों के लिए प्रसिद्ध है जिन्हे डांग या बीहड कहा जाता है
* डांग का सर्वाधिक विस्तार करौली मे है अतः यह डांग की रानी कहलाती है

* वर्षाजल अपरदन व नदियों के अत्यधिक कटाव के कारण गहरी-गहरी घाटियां बनती है जिन्हें चम्बल बेसीन में "बीहड़" कहा जाता है।

बीहड़

* बीहड़ का सर्वाधिक विस्तार क्रमश →

कोटा → सवाईमाधोपुर → धौलपुर → करौली आदि जिलो मे मिलता है।
1.32 लाख H. 1.30 लाख H.

* चम्बल बेसीन के क्षेत्र में सर्वाधिक उपजाऊ भूमि क्षेत्रफल है।

2. माही/छप्पन बेसीन :→

* इसका विस्तार बांसवाड़ा, दक्षिण प्रतापगढ़, दक्षिण-पूर्वी उदयपुर व डूंगरपुर जिलो में है।
* इस भाग का ढाल उत्तर-पूर्व से द. पश्चिम की ओर मिलता है। इस भाग मे लाल-लोमी मिट्टी सर्वाधिक मिलती है जो मक्का की फसल के लिए उपयुक्त मानी जाती है।
* डूंगरपुर व बांसवाड़ा के मध्य का भाग "मेवल" कहलाता है।

* प्रतापगढ़ व बांसवाड़ा के मध्य 56 गांवों का समूह / 56 नदी नालों का उपजाऊ मैदान है जिसे छप्पन का मैदान / छप्पन प्रदेश कहा जाता है।

3. बाणगंगा बेसीन →

* इस भाग का विस्तार जयपुर, दौसा, भरतपुर जिलो में है।

* बाणगंगा बेसीन का सर्वाधिक उपजाऊ भाग जयपुर जिले मे

मे मिलता है।

* इस भाग का ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर है।

प. बनास बेसिन →

इस भाग का विस्तार राजसमंद, चित्तौड़, भीलवाड़ा, टोंक, अजमेर व सवाई माधोपुर जिलों मे है।

* इस भाग का ढाल द.प से पूर्व / दक्षिण पश्चिम से उत्तर पूर्व की ओर है।

* अन्य महत्वपूर्ण तथ्य :→

* भौगोलिक प्रदेशों में सर्वाधिक उपजाऊ भौतिक प्रदेश है।

* भौतिक प्रदेशों में सर्वाधिक जनघनत्व इसी भाग मे है।

* सिंचाई के साधन उपर्युक्त भाग में होने कारण इस भाग में प्रत्येक मौसम की फसले ली जाती है।

* प्रत्येक मौसम की फसले ली जाती है।

* सम्पूर्ण पूर्वी मैदान प्रदेश का ढाल राज्य में दक्षिण-पश्चिम से उत्तर-पूर्वी की ओर मिलता है।

4. दक्षिणी - पूर्वी पठारी प्रदेश

* यह मालवा पठार का ही भाग है जिसका विस्तार राज्य के दक्षिणी-पूर्वी भाग में मिलता है।

* भौतिक प्रदेशों मे सर्वाधिक नदियों व सर्वाधिक वर्षा प्राप्त करने वाला भौतिक प्रदेश है।

* राज्य का एकमात्र भौतिक प्रदेश जिसमे अरावली व विंध्यांचल दोनों श्रेणियों का विस्तार मिलता है / अतः ग्रेट बाउंड्री फाल्ट की स्थिति इसी भाग में मिलती है।

* दक्षिणी - पूर्वी पठारी प्रदेश के 2 भाग →

1. विंध्यन (खड़े ढाल) कगार भूमि → यह विंध्याचल का अंतिम भाग है जिसका विस्तार कोटा, बूंदी, सवाई, माधोपुर जिले में सर्वाधिक मिलता है।
(कोटा, बूंदी, S.M. करौली, धौलपुर)
सर्वाधिक इनमे

2. मालवा / लावा पठार → यह ज्वालामुखी क्रिया द्वारा निकले लावा से निर्मित पठारी भाग है जिसमे सर्वाधिक काली मिट्टी का विस्तार मिलता है।
* इस क्षेत्र का विस्तार कोटा, बूंदी, बारां, झालावाड़ (हाड़ौती क्षेत्र) मे मिलता है।

* अन्य उपभाग →

1. ऊपरमाल → इस पठार का विस्तार भैंसरोड़गढ़ (चितौड़) से बिजोलिया (भीलवाड़ा) के मध्य मिलता है।

2. मानदेसरा का पठार → इस पठार का विस्तार भैंसरोड़गढ़ (चितौड़) मे है। भैंसरोड़गढ़ अभयारण्य इसी पठार पर फैला हुआ है।

3. शाहबाद उच्च भूमि → इस भाग का विस्तार बारां जिले के पूर्वी भाग में मिलता है जहां घोड़े की नाल के समान आकृतियों वाली पहाड़ियां मिलती है।

4. डग गंगधार उच्च भूमि / क्षेत्र → इस भाग का विस्तार झालावाड़ जिले के उत्तरी - पश्चिमी भाग मे है।

5. मुकुन्दवाड़ा पहाड़ियां → इन पहाड़ियों का विस्तार कोटा जिले के दक्षिण - पश्चिम से लेकर झालरापाटन (झालावाड़) तक है। इन पहाड़ियों का आकार अर्द्धचन्द्राकार रूप में मिलता है।